मेहनतकशों का पैग़ाम

मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

धन बर्बादी के तरीके एमसीएफ से सीखें 3
आपातकाल में आरएसएस की गद्दारी 4
संजय भट्ट की अकेली लड़ाई 5
ब्रह्मकुमारी का अय्याश संचालक 6
दिल्ली पुलिस उगाही में आगे 8

वर्ष 32 अंक -33 फ़रीदाबाद 30 जून-6 जुलाई 2019 फोन -8851091460 ₹ 2.50

बेतहाशा बढ़ते क्राइम की भेंट चढ़े कांग्रेस 'प्रवक्ता' विकास चौधरी

फ़रीदाबाद (म.मो.) चेन-झपट, शराब-तस्करी, जुए-सट्टे व छोटे-मोटे शांति-भंग जैसे अपराधों की रोक-थाम में पुलिस की विफ़लता से उत्साहित अपराधी अब हत्या जैसे बड़े अपराध करने में कतई कोई संकोच नहीं कर रहे। हत्यायें तो अब इस रफ़्तार से होने लगी हैं जैसे पहले चेन झपट की वारदातें होती थीं। बीते सप्ताह तो एक के बाद एक तीन दिन में तीन हत्यायें ऐसे हो गयीं जैसे कोई मामूली वारदातें हों। 27 जून को रिहायशी सेक्टर मार्केट में प्रात: 9 बजे जिस तरह विकास की हत्या हुई उस से लगता है कि हत्यारे पूरी तरह बेखौफ़ थे। उन्हें पकड़े जाने और उसके बाद किसी कानूनी कार्यवाही का कोई भय नहीं था। लगता है वे राज्य की लचर आपराधिक न्याय व्यवस्था के कुंद होने के प्रति पूरी तरह आश्वस्त हैं। वे मानते हैं कि अव्वल तो पकड़े नहीं जायेंगे और पकड़े भी गये तो क्या फ़र्क पड़ता है, कुछ समय जेल में मस्ती काट लेंगे।

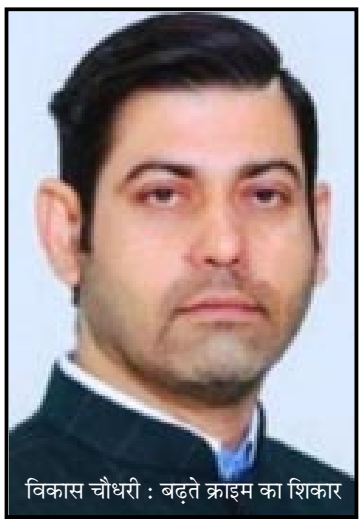
विकास चौधरी : बढ़ते क्राइम का शिकार

27 जून की ही दोपहर तक बीके अस्पताल में शव का पोस्टमार्टम करके जब प्रशासन ने उसे परिजनों को सौंपना चाहा तो उन्होंने यह कहते हुए लेने से इन्कार कर दिया था कि जब तक हत्यारे पकड़े नहीं जायेंगे, वे शव नहीं लेंगे। परन्तु अगले ही दिन यानी 28 जून को प्रात: उन्होंने शव ले जाना चाहा तो प्रशासन ने उसे देने से मना कर दिया। यद्यपि न तो प्रशासन ने यह कहा कि शहर में मुख्यमंत्री खट्टर के दौरे के चलते शव को रोक लिया गया है और न ही परिजन एवं कांग्रेसी नेता यह कह रहे थे कि वे शव को लेकर मुख्यमंत्री के कार्यक्रम में गड़बड़ झाला करेंगे, लेकिन समझने वाले यही समझ रहे थे। लिहाजा मुख्यमंत्री के चले जाने के बाद सायं करीब तीन बजे शव परिजनों को सौंपा गया। इस बीच बीके अस्पताल पुलिस छावनी बना रहा जिसके चलते मरीज़ों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। यदि अधिकारी जरा भी संवेदनशील होते और बुद्धिमता से काम लेते तो मरीज़ों को परेशानी से बचाया जा सकता था।

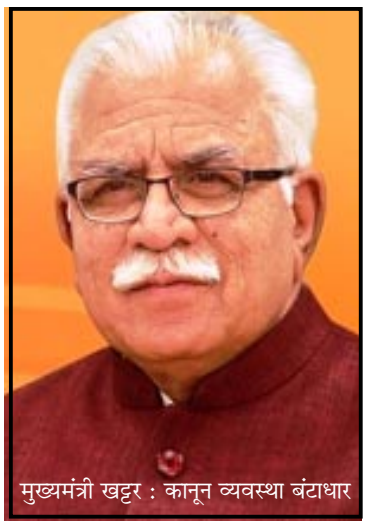
मुख्यमंत्री खट्टर : कानून व्यवस्था बंटाधार

विकास चौधरी को राज्य स्तरीय कांग्रेस नेता प्रोजेक्ट किये जाने पर सरकार को एतराज है। हत्या हुई, जो नहीं होनी चाहिये थी, हत्यारों को शीघ्र पकड़ने के लिये पुलिस की अनेकों टीमें लगातार छापें मार रही हैं। लेकिन इसके साथ-साथ मुख्यमंत्री खट्टर ने बताना जरूरी समझा कि विकास थाना सेक्टर 7 का दस नम्बरी आज भी है। उसके विरुद्ध 13 गंभीर आपराधिक मुकदमे आज भी चल रहे हैं। इनमें से एक यूपी के गौतमबुद्ध नगर में चल रहा है। जवाब में पलवल से कांग्रेसी विधायक करण दलाल का दावा आया कि भाजपा में इस से भी बड़े शातिर अपराधी भरे हैं।

शेष पेज दो पर

सुरक्षा के नाम पर भेद-भाव

डीजीपी हरियाणा मनोज यादव

आये दिन होने वाली इन हत्याओं के जवाब में पुलिस कहती है कि कानून के मुताबिक उसने मौका मुआयना कर लिया, एफ़आईआर दर्ज कर ली, दोषियों को पकड़ कर अदालत में पेश कर देगी जहा से जेल भेजना न भेजना अदालत का दायित्व है। यानी अपना कर्त्तव्य मुस्तैदी से निभा रही है।

दरअसल पुलिस का काम मात्र काग़ज काले करना या दौड़-धूप करना मात्र नहीं है। उसका असली दायित्व जनता को जान-माल की सुरक्षा को लेकर आश्वस्त करना है जो वह तमाम वजहों से नहीं कर पा रही है। यदि पुलिस का काम केवल एफ़आईआर दर्ज करके दोषियों को कोर्ट में पेश करने भर का है तो समाज के चंद लोग़ों की सुरक्षा के लिये गनमैन क्यों दे रखे हैं? उनकी भी हत्या हो जाने दो, हत्या के बाद उनका भी मुकदमा दर्ज कर लेना और कागज काले कर लेना समाज के विशेष लोग़ों की सुरक्षा के लिये एक विशेष व्यवस्था और जन साधारण के लिये दूसरी व्यवस्था। आखिर यह भेद-भाव क्यों? संविधान सब को बराबर का अधिकार देता है तो शासक वर्ग उस में दुभांत कैसे कर सकता है?

फ़िरौती का चक्कर ?

अपुष्ट जानकारी के अनुसार कौशल गैंग ने विकास से एक करोड़ की फ़िरौती मांगी थी जिसे देने से उसने मना कर दिया था। यह गैंग बड़े शराब तस्करों एवं कारोबारियों व जुआ-सट्टे का बड़ा करोबार चलाने वालों से इसी तरह की फ़िरौतियां मांग रहा है। पलवल के शराब व्यापारी नारंग से भी एक करोड़ की फ़िरौती मांगे जाने की बात चर्चा में है। बताते हैं कि गैंग का टारगेट फ़रीदाबाद से 50 करोड़ की वसूली का है। यह वसूली तभी पूरी हो सकती है जब सम्बन्धित लोग़ों में भय पैदा हो और भय पैदा करने के लिये विकास की हत्या जैसे कांड करने जरूरी हैं।

संत नगर में नशे व जुए के कारोबार को फरीदाबाद पुलिस का पूरा संरक्षण

गुंडागर्दी के बल पर अवैध पार्किंग, रेहड़ी-खोखों से वसूली व रेलवे टिकटों की काला बाज़ारी

फ़रीदाबाद (म.मो.) राष्ट्रीय राजमार्ग से ओल्ड रेलवे स्टेशन को जाने वाली बल खाती सड़क के दाहिने ओर बसे संतनगर में जूली नामक महिला व उसका साथी राजू व दारा सिंह नशे का एक बड़ा अड्डा चलाते हैं। राजू एक मुस्लिम युवक है जो अपना असल नाम छिपा कर यह काला कारोबार चला रहा है। दारा सिंह लाइज़निंग यानी जोड़-तोड़ करने की भूमिका निभाता है। किस पुलिस को क्या देना है, कैसे सैटिंग बैठानी है, यह सब दारा सिंह के जिम्मे रहता है।

इनके अड्डे से रोज़ाना करीब 5-7 किलो गांजा बिक जाता है। करीब 4-5 माह पूर्व राजू को 20 किलो गांजे के साथ सीआईए पुलिस ने पकड़ कर जेल भेजा था जहां से वह जमानत पर आकर अपने धंधे में पूर्ववत व्यस्त है। जानकार बताते है कि पकड़े गये 20 किलो गांजे में से पुलिस ने केवल 12 किलो की बरामदगी दिखाई थी। गांजे के अलावा स्मैक की पुड़िया भी बेची जाती हैं। इनकी कीमत 120,150,व 240 रुपये तक होती है। छोटे बच्चों (9 से 13 वर्ष) वालों के लिये किसी सुलोशन को बेचा जाता है। जिसे सूंघ कर ये बच्चे

सरगना : संजू और जूली

टुन्न हो जाते हैं। एक बार के सूंघने लायक सुलोशन का खर्च 100 रुपये तक होता है। दिन भर में करीब 250-300 ट्यूब इस सुलोशन की बिक जाती हैं। यही बच्चे बड़े होकर अपराध जगत में बड़े-बड़े अपराध करते हैं क्योंकि इन्होंने और कुछ सीखा ही नहीं होता।

इस पूरे कारोबार के साथ आजकल अवैध शराब व जुए-सट्टे का धंधा तो एक मामूली कारोबार रह गया है। जानकार बताते हैं कि जूली की तीन बहनें व कुछ अन्य लड़के भी इस कारोबार में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। यह पूरा गैंग किसी भी तरह की गुंडागर्दी व मारपीट करने से नहीं कतराता। इनका अड्डा स्टेशन को जाने वाले रास्ते से सटा होने के चलते कुछ लड़के रात-बिरात आते-जाते यात्री से छीना-झपटी करने से भी गुरेज नहीं करते। छोटे लड़के नशे का खर्च निकालने के लिये अक्सर इस तरह की वारदात करते रहते हैं, बात बढ जाने पर गिरोह के अन्य सदस्य भी उनकी मदद को आ जाते हैं। जरूरत पड़ने पर जूली बहनें भी मैदान में उतर आती हैं।

पुलिस में शिकायत करने पर वह भी इसी गैंग का साथ देती है; उल्टे लड़कियों की शिकायत पर पीड़ित के ही विरुद्ध कार्यवाही करने की धमकी दी जाती है। कहने की जरूरत नहीं, पुलिस संरक्षण के बिना इतना बड़ा काला कारोबार कभी चल ही नहीं सकता। अपना-अपना चुग्गा-पानी वसूलने के लिये दिन भर यहां पुलिस, खास कर सीआईए वालों का आना-जाना लगा रहता है। सम्बन्धित पुलिस चौकी सेक्टर 16 वालों को यहां आने की जरूरत इसलिये कम ही पड़ती है क्योंकि उनका बंधा हफ़्ता वहां स्वत: पहुंच जाता है।

पुलिस के दैम पर :

पुलिस कमिश्नर संजय कुमार

इस गिरोह ने स्टेशन को जाने वाली आधी सड़क घेर कर अवैध पार्किंग बना रखी है जहां सैंकड़ों दैनिक यात्री अपने साइकिल, स्कूटर व अन्य वाहन खड़े करने की फ़ीस इन्हें देते हैं।

इसी क्षेत्र में इन्होंने पचासों रेहड़ी व खोखे लगवा रखे हैं जिनसे किराया वसूला जाता है तथा उन्हें चोरी की बिजली भी बेची जाती है। रेलवे टिकट आरक्षण खिड़की पर भी इस गैंग का कब्ज़ा रहता है। कोई साधारण आदमी इनकी मर्जी के बिना आसानी से तत्काल की टिकट नहीं खरीद सकता। गिरोह के लोग 500 रुपये तक का ब्लैक एक टिकट पर वसूल कर लेते हैं।

पुलिस संरक्षण में हो रही यह खुली गुंडागर्दी एवं लूट क्या पुलिस के उच्चाधिकारियों को नज़र नहीं आ रही या वे भी इस लूट में से अपना हिस्सा लेकर आंखे बंद किये रखने का नाटक कर रहे हैं।